चमत्कार का भांडा फूटा

सानाल एडामारुकु *के साथ एक साक्षात्कार*

5 मार्च 2012 के दिन से मुंबई के विले पार्ले इलाके में स्थित अवर लेडी ऑफ वेलंकणी चर्च में स्थापित सलीब के निचले हिस्से से पानी टपकता देखा गया। कई दिनों तक दर्ज़नों लोग इस 'पारलौकिक' घटना को देखने आते रहे, प्रार्थना करते रहे, मोमबत्तियां जलाते रहे और पानी इकट्ठा करके इस उम्मीद में घर ले जाते रहे कि यह चमत्कारिक पानी है। *भारतीय रेशनेलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष* सानाल एडामारुकु *ने इस चमत्कार का भांडा फोड़ा जिसके कारण चर्च कमेटी ने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज़ करा दी।*

क्राइस्ट की मूर्ति को लेकर क्या दावा किया गया था और किसने किया था?

पुरोहितों और अवर लेडी ऑफ वेलंकणी चर्च से सम्बद्ध कैथोलिक समाज ने यह दावा किया था कि जीसस की प्रतिमा के पैर से पानी निकल रहा है जो भगवान के होने का सबूत है। चमत्कार के बारे में अखबारों में छपा था। इस चमत्कार को देखने के लिए हज़ारों भक्त चर्च की गली में इकट्ठे हो गए, पूजा अर्चना करने लगे और नाली के इस 'पवित्र' पानी को अपनी बीमारियां दूर करने के लिए इकट्ठा करने और पीने में जुट गए।

आपने इसमें हस्तक्षेप कैसे किया?

इस पूरे घटनाक्रम की समीक्षा के लिए मुझे मुम्बई स्थित राष्ट्रीय टीवी चैनल TV-9 के दिल्ली स्टूडियो में बुलाया गया था। इस प्रोग्राम में मैंने चमत्कार होने की संभावना को नकार दिया, लेकिन उस जगह बिना जांच पड़ताल के मैं कोई वैज्ञानिक तर्क नहीं दे पाया। इसके बाद उस चैनल ने मुझे मुम्बई आने को कहा। चर्च के अधिकारी सहमत हो गए और पुरोहितों और समाज के कुछ प्रमुख लोगों ने वेलंकणी चर्च में मेरा स्वागत किया। मैंने धार्मिक कार्यक्रम खत्म होने का इंतज़ार किया और फिर इन सभी की अनुमति से और उनकी उपस्थिति में अपनी जांच-पड़ताल में लग गया। लगभग आधा घंटे के बाद मैंने पास में स्थित बाथरूम और उससे जुड़ी नाली का बारीकी से अध्ययन किया और पाया कि वह नाली क्रॉस के कांक्रीट आधार के नीचे से होकर जा रही थी। मैंने ड्रेनेज से कुछ पत्थर हटाए और पाया कि यह ड्रेनेज लाइन बंद हो गई थी। मैंने दीवार को छुआ और क्रॉस को छुआ और कुछ फोटोग्राफ डाक्यूमेंटेशन हेतु लिए। मैंने अपने निष्कर्ष चर्च परिसर में उजागर नहीं किए क्योंकि मैं आस्थावान लोगों को ठेस पहुंचाना नहीं चाहता था।

अलबत्ता, कुछ घंटों बाद मैंने यह पूरा घटनाक्रम एक लाइव टीवी प्रोग्राम पर बताया। यह बहुत ही आसान, सामान्य और स्पष्ट था: ड्रेनेज नाली बंद होने के कारण बाथ

रूम का पानी केपिलरी (केशिका) क्रिया द्वारा दीवार में और लकड़ी से बने क्रॉस व उसके निचले हिस्से में पहुंच रहा था। क्रॉस को रंग किया गया था, इसलिए पानी नीचे कीलों के लिए बने छेदों से होता हुआ पैरों से बाहर आ रहा था।

आपने हस्तक्षेप करने का निर्णय क्यों लिया?

जब कुछ लोग भोली-भाली जनता को गंदा पानी पीने के लिए दे रहे हैं तब हस्तक्षेप न करूं, ऐसा कैसे हो सकता है? लेकिन मेरा कारण थोड़ा बड़ा है। इस तरह की पारभौतिकी घटनाओं से अंधविश्वास को बढ़ावा देने की कोशिश की जाती है जिससे लोगों का दिमाग मंद होता है और हमारे समाज में यथार्थ को लेकर गलतफहमी पैदा होती है। इन कोशिशों का विरोध करना होगा। यह केवल मेरा मानना ही नहीं है बल्कि भारतीय संविधान के निर्माता भी इस तरह के विचारों से इत्तफाक रखते थे। इसीलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने को हमारे संविधान में एक मौलिक कर्तव्य माना गया है।

आपके खिलाफ शिकायत क्या है?

हैरत की बात है कि पुलिस ने मुझे शिकायत के बारे में कोई जानकारी नहीं भेजी है। मेरे पास लिखित में कुछ भी नहीं है। लेकिन मैं जानता हूं कि भारतीय दंड संहिता के सेक्शन 295 A के तहत मेरे खिलाफ आरोप लगाए गए हैं। इस कानून के तहत किसी व्यक्ति द्वारा ''जान-बूझकर किसी वर्ग या समुदाय की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुंचाना और दुर्भावनापूर्ण तरीके से आक्रमण करना'' आता है। यह कहना हास्यास्पद है कि मैंने ऐसा कुछ किया है। यह शिकायत सिर्फ मुझे परेशान करने के लिए है। यह बहुत साफ है कि उनके चमत्कार को झूठा बताने के बदले उन्होंने ये आरोप मुझ पर लगाए हैं।

295 A एक ढीला-ढाला कानून है जिसे कोई भी कभी भी अपनी भावनाओं को ठेस पहुंचने का दावा करके लगवा सकता है। तब कोई आश्चर्य की बात नहीं कि लंबे समय से इस कानून का दुरूपयोग होता आया है। इस या उस धार्मिक समुदाय को ठेस पहुंचने के बहाने इस कानून का उपयोग कई व्यक्तियों को परेशान करने के लिए किया जाता है। मुझे परेशान करने की मंशा इन लोगों ने टीवी प्रोग्राम के दौरान ही ज़ाहिर कर दी थी। चर्च और समाज से जुड़े कुछ क्रोधित नेताओं को भी पैनल चर्चा में भाग लेने के लिए बुलाया गया था। उन्होंने वहीं स्पष्ट कर दिया था कि वे मेरे खिलाफ मुम्बई के सभी थानों में शिकायत दर्ज करेंगे और मुझे गिरफ्तार करवा देंगे। जिसके कारण मैं कुछ समय के लिए ''रोशनी नहीं देख'' पाऊंगा।

शिकायत किसने दर्ज़ करवाई?

एसोसिएशन ऑफ कन्सर्न्ड कैथोलिक्स और महाराष्ट्र क्रिश्चियन यूथ फोरम, इन दो कट्टरवादी समूहों के नेताओं ने शिकायत दर्ज़ की थी। उन्होंने कहा था कि कैथोलिक चर्च उनकी इस कार्रवाई के लिए उत्तरदायी नहीं है, लेकिन बिशप तालियां बजा रहे हैं। मुम्बई के सहायक बिशप एगनिलो ग्रेसियास, जिनके साथ टीवी 9 प्रोग्राम पर मेरी बहस हुई थी, ने अपने गुर्गों के साहस की प्रशंसा की है।

इस पर आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या थी?

मैंने इसे गंभीरता से नहीं लिया।

इसके परिणामों को लेकर आपके मन में कुछ डर है?

यदि यह ट्रायल कोर्ट में आता है, तो मुझे कोई डर नहीं। मैं तो इस मौके का स्वागत करूंगा और इसके ज़रिए इस बात पर प्रकाश डालूंगा कि कैथोलिक चर्च ने पूरे इतिहास में क्या भूमिका निभाई है और आज भारत में क्या भूमिका निभा रहा है। यद्यपि गिरफ्तारी की संभावना है। हमारे पास प्रमाण हैं कि मुम्बई पुलिस के कुछ अफसर इन हठधर्मियों के साथ मिले हुए हैं। मैं इनकी हिरासत में रहना नहीं चाहूंगा।

इस तरह के चमत्कारिक दावों का विरोध करना क्यों ज़रूरी है?

भारतीय रेशनेलिस्ट एसोसिएशन विश्व को समझने के लिए आलोचनात्मक व साक्ष्य आधारित सोच व तर्क की हिमायत करता है जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के मौलिक कर्तव्य के अनुरूप ही है। यही एकमात्र रास्ता है

जिसके द्वारा धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास और असहिष्णुता पर काबू पाया जा सकता है। इन चीज़ों की वजह से लोगों को भयानक व्यक्तिगत कष्ट होते हैं।

बहुत से लोगों के लिए अंधविश्वास और चमत्कार में विश्वास अपने जीवन की कठिनाइयों से आंख चुराने का एक तरीका होता है। एक बार इनके चक्कर में फंसने पर वे यथार्थ पर काबू करने में असमर्थ होते जाते हैं। तब वे बाबाओं, ज्योतिषियों, नकली मनोचिकित्सकों, भ्रष्ट राजनेताओं वगैरह पर निर्भर हो जाते हैं और इनके द्वारा शोषण के शिकार होने लगते हैं। इन्हीं लोगों ने अंधविश्वास को ज़िंदा रखा है। कमज़ोर तबके में इस तरह के अंधविश्वास को मज़बूत करना आर्थिक लाभ और सत्ता हासिल करने का साधन बन जाता है।

वेलंकणी का चमत्कार भी इसी तरह का है। मुझे शंका है कि इस चमत्कार को बढ़ावा देने के पीछे मंशा यह रही होगी कि इस जगह को तीर्थस्थल बनाया जाए। यह एक सामान्य तरीका है। वास्तविकता यह है कि इतिहास में कैथोलिक चर्च ''चमत्कारों का कारखाना'' रहा है। पिछले पूरे दशक में, दस हज़ार से ज़्यादा कैथोलिक संतों में से प्रत्येक ने कम से कम दो अनिवार्य चमत्कार प्रस्तुत किए हैं। और तो और, 21वीं सदी में भी चमत्कार करने की यह परंपरा जारी है। इस संदर्भ में भारत में मदर टेरेसा का विवादास्पद चमत्कार एक उदाहरण है। खास तौर से भारत में, जहां लोगों एक बहुत बड़ा हिस्सा अंधविश्वास में यकीन करता है, मिशनरीज़ को सलाह दी जाती है कि वे चमत्कार का खेल खेलें। यह साफ तौर से विज्ञान व तर्क के विपरीत है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वाले संवैधानिक लक्ष्य का विरोधी भी है।

आपने इस तरह के हस्तक्षेप पहले भी किए हैं? क्या भारत में चमत्कार के दावे सामान्य हैं, आप अपने संदेश को कैसे और किस माध्यम से सभी तक पहुंचाएंगे (टेलीविज़न या कोई और)?

पारभौतिक घटनाओं या ताकतों का पर्दाफाश करना भारतीय रेशनेलिस्ट एसोसिएशन का प्रमुख काम रहा है। इस संगठन की शुरुआत 1930 में हुई थी। मैं व्यक्तिगत रूप से 30 सालों से इस काम में जुड़ा हूं। मैंने अंधविश्वास के विरोध में भारत के सैकड़ों गांवों में काम किया है और कई युवा तर्कवादी कार्यकर्ताओं और विज्ञान के छात्रों को इसके लिए तैयार किया है। मैंने उन्हें कई अजीबोगरीब और प्रसिद्ध चमत्कारों के पीछे का विज्ञान समझाया है और पाखंडियों का पर्दाफाश करने का तरीका बताया है। इसमें स्व. साईं बाबा जैसे चमत्कारी बाबा शामिल हैं।

मैं भारतीय टेलीविज़न के ज़रिए इसे फैलाना चाहूंगा और इस इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का प्रभाव देखना चाहूंगा। अभी तक मैंने कई पैनल चर्चाओं और लाइव टीवी शो पर एक खोजकर्ता के रूप में और भारतीय पारभौतिक घटनाओं के विशेषज्ञ के रूप में अपने अनुभव बताए हैं। टीवी पर उपस्थिति से मुझे कई बार तुरंत प्रभाव मिले हैं। इससे मुझे दूध पीने वाली मूर्ति, मुम्बई की माहिम खाड़ी में मीठे (वास्तव में सीवेज के) पानी के सेवन और मंकी-मैन के उपद्रव के खिलाफ उन्माद को कम करने में मदद मिली थी। अभी मेरे टीवी कार्यक्रमों के दूरगामी प्रभाव का आकलन करना बाकी है। इस तरह के चमत्कारों के पीछे के तथ्यों और वैज्ञानिक कारणों को बार-बार बताना काफी प्रभावशाली रहा है। मगर इससे भी ज़्यादा महत्त्व इस बात का है ऐसे कार्यक्रमों से पारभौतिक शक्तियों का डर कम होता है।

कुछ साल पहले, एक लाइव टीवी प्रोग्राम पर, मैंने एक जाने-माने तांत्रिक को चुनौती दी थी कि वह अपनी शक्तियों और जादू-टोना, मंत्र उच्चारण से मुझे मारकर अपने दावे को सच साबित करे। कुछ समय तक मैंने उसके नाटक को देखा और उसके क्रियाकलापों का मज़ाक बनाता रहा। लोगों की प्रतिक्रिया अद्‌भुत थी। मैं जहां भी जाता हूं मुझे वहां बहुत प्यार और सम्मान मिलता है। कई अनजान लोगों ने मुझे बताया है कि मेरी वजह से उनकी ज़िन्दगी बदल गई है। यह बहुत सुखद है।

आम लोगों और अधिकारियों की क्या प्रतिक्रिया रही है?

तर्कवाद का भारत में बहुत सम्मान है। ज़्यादातर लोग चाहते हैं कि तर्क और विज्ञान के आधार पर पक्षपात रहित और स्पष्ट बात कही जाए हालांकि यह हो सकता है कि वे स्वयं कभी-कभार तर्कहीनता में उलझ जाते हैं। बहुत से

लोग अंधविश्वास का विरोध करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते हैं, मगर तर्कवादी हस्तक्षेप से उन्हें बहुत तसल्ली मिलती है। जब मैं किसी केस की जांच-पड़ताल करता हूं, तब मुझे पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों का कहा-अनकहा समर्थन मिलता है।

अलबत्ता, कुछ लोगों की प्रतिक्रिया अच्छी नहीं रहती है, विशेष रूप से उनकी जिनका पर्दाफाश मेरे टीवी प्रोग्राम में होता है और उनका बिज़नेस मेरे कारण ठप होता है। पैनल चर्चा में कुछ ज्योतिष और तांत्रिक मुझ पर चिल्लाते हैं और धमकी देते हैं। वे यह नहीं जानते कि लोगों की आंखें कार्यक्रम पर लगी हुई हैं और चीख-चिल्लाकर वे मेरे मत को ही मज़बूत कर रहे हैं। कई साल पहले मेरे ऊपर एक नामी तांत्रिक ने हमला किया था। उसने मेरे ऊपर आग से भरा एक बड़ा मटका फेंका था। उस समय मैंने एक धार्मिक त्यौहार के दौरान आग के उसके मशहूर जादू का भांडा फोड़ा था। मैं तो बाल-बाल बच गया, मगर वह तांत्रिक बुरी तरह जल गया था और जनता के सामने दोबारा कभी प्रकट नहीं हुआ।

किसी ने कभी भी मेरे खिलाफ पुलिस में कोई शिकायत नहीं की।

यूके के रेशनेलिस्ट एसोसिएशन ने इस शिकायत को खारिज करने के लिए अभियान चलाया है।

किसी दिन मैं अपने सभी समर्थकों से हाथ मिलाना चाहता हूं। यह एक सुखद अनुभूति है कि हज़ारों लोग मेरे साथ हैं। और यह एक अद्‌भुत अभियान है। मुझे नहीं लगता कि बिशप ग्रेसियास अपने 'बहादुर' मित्रों को वापिस बुलाएंगे, मगर जब ये अनगिनत याचिकाएं उनके इनबॉक्स में पहुंचेंगी तब वे 'ताली बजाना' भूल जाएंगे। याचिकाओं से पता चलता है कि इस मामले में कैथोलिक समाज में भी मतभेद हैं। इससे कट्टरपंथी अलग-थलग पड़ गए हैं। मुझे कैथोलिक लोगों के पत्र मिले हैं जिनमें उन्होंने अपने चर्च के साथ असहमति और शर्मिंदगी व्यक्त की है। उन्हें यह बर्दाश्त नहीं है कि किसी को सच बोलने के लिए परेशान किया जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत नवम्बर 2012
अंक 286

- **ई-वेस्ट कानूनों से कुछ बदलेगा क्या?**
- **इंसान और जीवाणु : युद्ध या सह-अस्तित्व?**
- **प्रयोगों में खरगोश की पीड़ा**

- **मंगल पर जीवन हुआ, तो कैसा होगा?**
- **सौर मंडल को नापने की नई इकाई**